ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष-18 अंक-10 अगस्त-II-2018 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 10.00

अध्यात्म से ही समाप्त होंगी सामाजिक विसंगतियां

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'वैश्विक ज्ञानोदय से स्वर्णिम युग' विषय पर चार दिवसीय धार्मिक सम्मेलन का सफल आयोजन

सम्बोधित करते हुए दादी जानकी। साथ हैं संत महात्मायें, ब्र.कु. गोदावरी, ब्र.कु. मनोरमा तथा अन्य।

ज्ञानसरोवर-माउण्ट आबू। धार्मिक सेवा प्रभाग के सम्मेलन में आनंद कृष्ण धाम अध्यक्ष आचार्य महामण्डलेशवर आनंद चैतन्य महाराज सरस्वती ने कहा कि मनुष्य के मन पर दैहिक धर्मों का पर्दा पड़ने से नैतिक मूल्यों का उल्लंघन हो रहा है। विश्व के सभी लोग देह के धर्म से ऊपर उठकर अपने निजी स्वधर्म को पहचान कर एकजुट हो जायें तो आध्यात्मिकता के ज़रिए सामाजिक विसंगतियां समाप्त हो जाएंगी। आधुनिकता के प्रभाव से डगमगाती आध्यात्मिकता को सम्बल देने का अद्भुत उदाहरण ब्रह्माकुमारी संगठन के 81 वर्षों का इतिहास भटके हुए मानव को विकृतियों से छुड़ाकर सत्य मार्ग दिखाने का रहा है।

ब्रदी आश्रम नागौर के महामण्डलेश्वर नारायण शास्त्री जी ने कहा कि धर्म, कर्म जीवन के अभिन्न अंग हैं। ब्रह्माकुमारी संगठन स्वयं के जीवन की ज्योति प्रकाशित करने के साथ विश्व स्तर पर जनहित कार्यों को मूर्तरूप देने में समर्थ है।

नोएडा वृंदावन धाम महामण्डलेश्वर विष्णु दास जी महाराज ने कहा कि विश्व में फैले अनेक धर्मों को एक मंच पर एकत्रित कर परिवार की तरह जोड़ने का ब्रह्माकुमारी संगठन ने जो कार्य किया है वह अद्वितीय है। दिल्ली से आईं तरविन्द्र कौर खालसा ने कहा कि मानवीय चरित्र निर्माण करना सबसे पुण्य का कार्य है। अनावश्यक संस्कारों से मुक्ति प्राप्त करने के लिए राजयोग का नियमित अभ्यास बेहतर उपाय है। विरायतन बिहार मुख्य संरक्षक डॉ. साध्वी समप्रज्ञा ने कहा कि धर्म ग्रंथ मानव को सत्य व अहिंसा की शिक्षा देते हैं लेकिन उन शिक्षाओं को मन की भूमि पर अंकुरित करने के लिए शिव परमात्मा से संबंध जोड़ना ज़रूरी है। डॉ. प्राम्भा विराट ने कहा कि ज्ञान एक प्रकाश है जो मन के सभी प्रकार के अंधकार को समाप्त कर जीवन में नई ऊर्जा का संचार करता है। राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. मनोरमा ने कहा कि अविनाशी सुख, शांति के लिए अविनाशी सत्ता अर्थात् आत्मा व परमात्मा की सत्यता को जानना ज़रूरी है। प्रभाग संयोजक ब्र.कु. रामनाथ ने भी अपने विचार रखे।

मूल्यों को स्थापित करने का एकमात्र विकल्प : दादी

संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा कि परमात्मा का ज्ञान आत्मा को समर्थ बनाता है। जिससे समाज के हर वर्ग का उत्थान करने की मानसिकता को बल मिलता है। किसी भी देश व व्यक्ति की पहचान उसकी संस्कृति से होती है। समाज से लोप हो रही मानवीय संवेदना, सुख, शांति, प्रेम, पवित्रता, सद्भावना आदि मूल्यों को स्थापित करने का एकमात्र विकल्प आध्यात्मिक ज्ञान है।

ट्रीट ही नहीं, हील भी करें चिकित्सक

शहर के विभिन्न वर्गों को जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी ने सिखाया जीवन जीने का नया अंदाज़

मंचासीन हैं ब्र.कु. हेमलता, सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. शिवानी, ब्र.कु. कमला दीदी तथा अभिनेता ब्र.कु. सुरेश ओबरॉय। ध्यानपूर्वक सुनते हुए शहर के प्रबुद्धजन।

इंदौर। अब समय है कि चिकित्सक बीमारी को ट्रीट नहीं करे वरन उन्हें हील करें। अस्पताल अब मंदिर की तरह सकारात्मक ऊर्जा के केन्द्र बनें जहां चिकित्सक स्वयं भी सकारात्मक ऊर्जा की स्थिति में हों। यह सकारात्मकता का वातावरण आपके तथा मरीज और उनके परिजनों में मौजूद भय को समाप्त करते हुए आपसी विश्वास तथा भरोसे में बदलता जायेगा और महिमा और यश पहले की तरह हो जायेगा।

ज्ञान शिखर के सभागृह में 'हीलिंग द हीलर' विषय पर बड़ी संख्या में उपस्थित डॉक्टर्स को सम्बोधित करते हुए जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी ने कहा कि हमें दूसरों से प्रशंसा, सुख, खुशी, संतुष्टता चाहिए। यही सब दूसरों को भी चाहिए। सब एक दूसरे से यही चाहते हैं। लेकिन यह सब एक रॉयल आत्मा की निशानी नहीं हैं। यदि यह सब नहीं मिलता है तब नाराज़गी, असम्मान, तनाव आदि पैदा होता है। इससे जीवन खुशी से भरा हुआ न होकर तनाव से भरा रहता है। उन्होंने कहा कि डॉक्टरी पेशा दान की प्रवृत्ति का पेशा है। क्योंकि डॉक्टर हमेशा बीमार व्यक्तियों को अच्छे स्वास्थ्य का दान करता है। डॉक्टर समाज में बहुत ही सम्मान जनक स्थान रखता है। अतः ज़रूरी है कि डॉक्टर उच्च विचारों व आचरण से युक्त व्यक्तित्व वाला हो। शिवानी दीदी ने कहा कि डॉक्टर फीज़िकल इन्फेक्शन के साथ-साथ इमोशनल इन्फेक्शन का भी ध्यान रखें। इन्फेक्शन नहीं हो इसके लिए हाथों की धुलाई करते हैं। इसी तरह भावनात्मक रूप से स्वस्थ रहने के लिए मन को अशुद्ध विचारों से दूर करें और अपने पर ध्यान दें।

इससे पूर्व प्रसिद्ध सिने अभिनेता **सुरेश ओबरॉय** ने अपने अनुभव बताते हुए कहा कि लगभग सभी बुराइयां मुझमें थीं - गुस्सा, अहंकार, झगड़ालू प्रवृत्ति आदि। पर परमात्मा का ज्ञान रोज़ रोज़ सुनकर मैं बदल गया। इस सबका श्रेय ब्रह्माकुमारी संस्थान को जाता है, जिसने मुझे इतना बदल दिया। राजयोग मेडिटेशन आज अब चुनाव नहीं रहा, अब यह मेरी ज़रूरत है।

विश्व परिवर्तक पारसमणि दादी प्रकाशमणि

संसार में कई महान आत्माओं का जीवन समस्त मानवता के मार्गदर्शक के रूप में होता है। उसमें से कई ऐसे हैं जो अवतार बनकर आते और एक नई छाप छोड़ते, जो आने वाली पीढ़ियों के जीवन में हर समय एक सहारा और पथ प्रदर्शक का कार्य करते। अवतार का मतलब ही होता है, ऊपर के आदेशों को धरा पर उतारना। भले ही कैसी भी परिस्थितियां हों, पर वो अपने उसूलों के साथ समझौता नहीं करते। वो एक तरह से परमात्म शक्ति से भरपूर इस धरा पर चलते फिरते एक फरिश्ते के रूप में ही होते, उनसे जो भी जहाँ भी मिलता, वो उत्कृष्ट जीवन के प्रकाश की खुशबू लेता और बिखेरे बिना नहीं रहता।

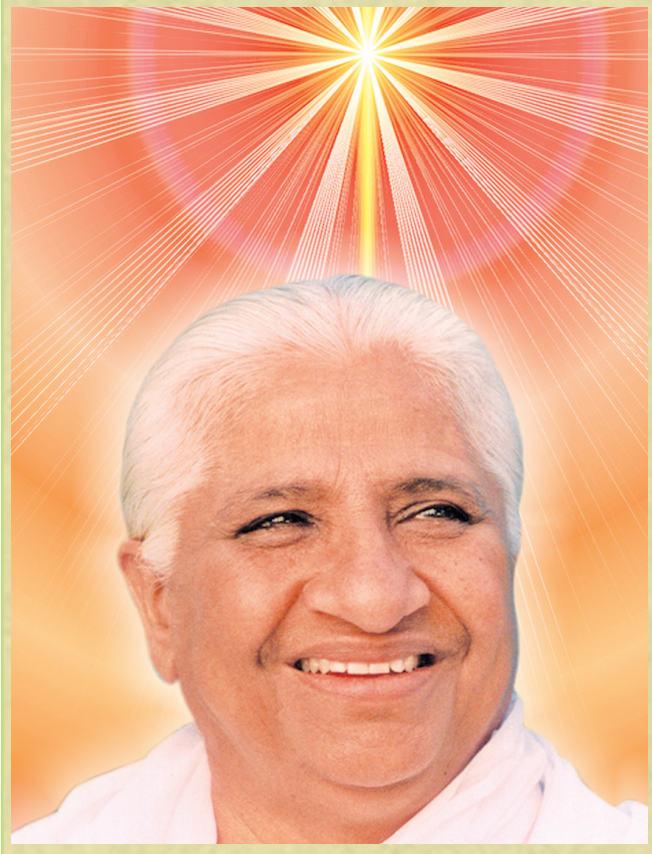

आज हम ऐसे ही एक अवतार के बारे में बात करने जा रहे हैं जो कभी न कभी आपसे उसका स्थूल या सूक्ष्म सानिध्य हुआ ही होगा। पर कोई ऐसी महान विभूतियों के बारे में कुछ कहना चाहे तो वह अपने शब्दों में उसे उतारने में असमर्थ होते हैं।

यूं तो दादी जी का जीवन ही खुली किताब की तरह रहा, फिर भी जो भी उनके सानिध्य में आये, उन्होंने दादी जी को अपने अनुभवों से जाना, समझा। हम किसी को अपने व्यक्तित्व के आधार से या यूं कहें कि हम अपनी क्षमता के आधार से देख पाते हैं। दादी जी का जीवन तो परमात्म निर्देशों को धरा पर उतारने के लिए ही था। परमात्मा द्वारा रचित इस महापरिवर्तन यज्ञ की दादी अग्रदूत थीं। उस महान आत्मा के जीवन से यही झलकता, जैसे कि उनका जीवन ही यज्ञ हो। वे यज्ञ की बेदी भी स्वयं, कुण्ड भी स्वयं, आहुति भी स्वयं थीं। उन्होंने यज्ञ की मर्यादाओं को परमात्म मर्यादाओं में बांध कर रखा। दादी भले ही आज हमारे साथ साकार में न हों, लेकिन एक पल भी नहीं लगता कि वो हमारे साथ नहीं हैं। आज हर कोई दादी जी के पद्चिन्हों पर चलकर अपनी राह को आसान बना रहा है।

दादी प्रकाशमणि को अगर पारसमणि की उपाधि दें, तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। अक्सर उनसे मिलने से ऐसा महसूस होता कि हमारे अंदर एक नई ऊर्जा का संचार हो रहा हो। हम अपने आपको मूल्यवान, कीमति सोना समझने लगते। वो समय तो अभी बीत चुका है, लेकिन आज भी

- शेष पेज 3 पर...

गोविंदा आला रे...!!! पेज-3

दादीजी के साथ बिताये लम्हें... पेज-4

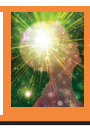
पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को पेज-5

स्वतंत्रता, स्व का तंत्र... पेज-7

कौन बड़ा... प्रालब्ध या पुरुषार्थ? पेज-9

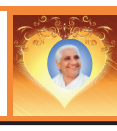
क्लीन एंड क्लीयर हार्ट पेज-10

डिप्रेशन से अपने को करें मुक्त... पेज-11